Class - B.Com I
Subject - BMC
Paper - I (S/b)
Topic - Management
Lecture - 32
By Dr C P Sahu
Marwari College Dar

Objectives of Management (1)

आधुनिक व्यावसायिक युग में प्रत्येक व्यक्तियों का कुछ न कुछ उद्देश्य होता है। उद्देश्य एवं लक्ष्य के निश्चित होने पर ही एक निश्चित दिशा की ओर आगे बढ़ते हैं। जिससे कार्य करने में सहायता मिल सके। उद्देश्य महत्वपूर्ण होते हैं व्यावसायिक संस्था के संचालन के लिए आवश्यक है। प्रबन्धकीय उद्देश्य एक ऐसा लक्ष्य है जो निश्चित क्षेत्र निर्धारित करता है तथा एक प्रबन्ध के प्रयासों के निर्देशन के लिए अपना मन्तव्य देता है।

किसी भी संस्था के लिए मान्यताओं का क्षेत्र निर्धारित होनी चाहिए जिसमें एक से अधिक उद्देश्य सम्मिलित हो। निर्देशन सामान्य रूप से उद्देश्य में निहित तत्व के अपेक्षित परिणामों को स्पष्ट करता है।

प्रबन्ध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं —

(1) प्राथमिक उद्देश्य - प्रबन्ध का मुख्य उद्देश्य होता है कि बाजार के माँग के अनुसार विक्रय योग्य वस्तुएँ तथा सेवाएँ प्रदान करे। उपभोक्ता को वे वस्तुएँ और सेवाएँ प्रदान होती हैं जो वे चाहते हैं और संस्था के सदस्यों को प्राप्त प्रतिफल से उनका पारिश्रमिक मिलना संभव हो सके। इस तरह प्राथमिक उद्देश्य प्रबन्ध द्वारा किये जाने वाले कार्य का निर्धारण करता है।

(i) ग्राहकों को शीघ्र ही विश्वसनीय एवं प्रतिस्पर्धात्मक वस्तु एवं सेवाएँ प्रदान करना।

(ii) उत्पादित वस्तुएँ एवं सेवाओं को एक ऐसे मूल्य पर बेचना जो देश के लिए हित में हो।

(iii) ग्राहकों को ये विश्वास दिलाना कि उत्पादित वस्तुएँ

नवीन एवं आधुनिकतम तरीके (कम्प्यूटर) से किया गया है। (2)

(2) सहायक उद्देश्य - सहायक उद्देश्य जो कार्य निष्पादन में कुशलता एवं मितव्ययिता में वृद्धि के लिए निर्धारित किये जाते हैं। उदाहरण के लिए जैसे - विश्लेषण, परामर्श एवं आपूर्ति सहायक उद्देश्य के अन्तर्गत आता है।

(3) व्यक्तिगत उद्देश्य - इसका आशय संगठन के सदस्यों के निजी एवं व्यक्तिगत उद्देश्यों से है। प्राथमिक एवं सहायक उद्देश्यों की पूर्ति होने के बाद ही व्यक्तिगत उद्देश्यों या तो आर्थिक उद्देश्य तथा मौद्रिक पारिश्रमिक या भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति संबंधी उद्देश्य होते हैं। आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति एक संगठन के अधीन कार्य करते समय संतुष्ट होने का प्रयास किया जाता है।

(4) सामाजिक उद्देश्य :— इसका तात्पर्य एक संगठन के समाज के प्रति उद्देश्यों एवं दायित्वों से है। इसके अन्तर्गत कर्तव्य एवं दायित्व समाज द्वारा निर्धारित किया जाता है जैसे— स्वास्थ्य, सुरक्षा, श्रम के साथ अच्छा व्यवहार एवं मूल्य नियंत्रण इत्यादि सामाजिक उद्देश्य के अन्तर्गत आता है। व्यावसायिक संस्था अपने प्राथमिक उद्देश्यों प्राप्त करने की प्रक्रिया में सामाजिक कार्यों के हित एवं आवश्यक सम्पत्तियों का निर्माण करते हैं तथा रोजगार व्यवस्था एवं वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।

इस प्रकार एक व्यावसायिक संस्था प्रबंध को समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को ध्यान में रखना चाहिए। समाज से अलग न तो कोई अस्तित्व है और न ही सामाजिक उत्तरदायित्व के पूर्ति के बिना जीवित रह सकता है।

व्यावसायिक संस्था समाज के हित के लिए वस्तुओं और सेवाओं की पूर्ति करने पर ही समाज में जीवित रहने का दावा कर सकते हैं। प्रत्येक संस्था के प्रबन्ध का उद्देश्य ऐसी वस्तु एवं सेवा की व्यवस्था के लिए प्रयत्न करना है जो समाज के लिए उत्पादक एवं आवश्यक हो, जो समाज को सुदृढ़ एवं समृद्धशाली बना सके। इस तरह हम कह सकते हैं कि प्रबन्ध के सामाजिक उत्तरदायित्व में सामान्य जनता के प्रति दायित्व की भावना निहित है। प्रबन्ध को समाज की सेवा के संबंध में अपने उद्देश्यों को निर्धारित करना चाहिए जिससे वह अपने उत्तरदायित्व की पूर्ति कर सके।